नाख़ुश माँ

लेखन व चित्रः बैन शैक्टर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

“क्या तुम कभी बदलोगे नहीं?” ओरिन की माँ ने एक दिन उस वक़्त पूछा जब वह फिर से ख़ुराफ़ात कर रहा था। उस रात ओरिन ने मन में इच्छा की कि वह बदल जाए - और अगली सुबह वह सचमें बदल गया। वह एक बिल्ला बन गया।

पर उसकी माँ को बिल्लियों से अलर्जी थी। ओरिन ने पाया कि उसे लगातार-बारबार बदलना पड़ेगा।

बैन शैक्टर ने हास्य-विनोद के क्षेत्र में एक नया कदम उठ़ाया है, जो उनके प्रशंसकों को ख़ुश करेगा।

नाख़ुश माँ

लेखन व चित्रः बैन शैक्टर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

नाख़ुश माँ

लेखन व चित्रः बैन शैक्टर

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

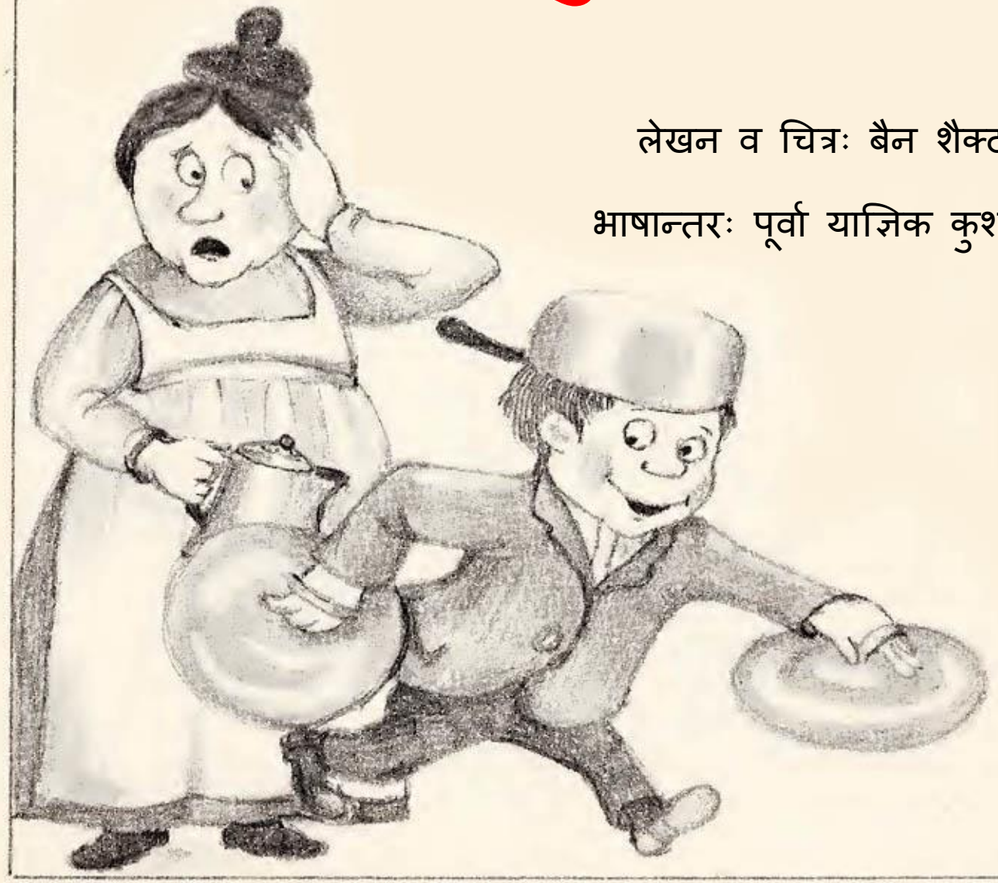

एक दिन जब ओरिन फिर से ख़ुराफ़ात कर रहा था,
जैसे वह कभी-कभार करता था, उसकी माँ ने कहा,
“क्या तुम कभी बदलोगे नहीं?” उस रात ओरिन ने
इच्छा की कि वह बदल जाए।

सुबह वह एक बिल्ला था।

जब उसकी माँ ने उसे देखा तो वे छींकीं और बोलीं,

“मुझे बिल्लियों से अलर्जी है।”

“मैं रात को तुम्हारे पैर गरम रखूंगा,”

बिल्ले ने वादा किया।

“मेरे पास पैर गरमाने के लिए गरम पानी की थैली है,”

माँ ने जवाब दिया।

अगले दिन बिल्ला हाथी बन गया।

“हाथी तो कभी नहीं!” माँ चीखी।

“बहुत बड़ा! बहुत ही बड़ा!”

“मैं तुम्हें कस्बे तक ले जाऊंगा और वापस लौटा लाऊंगा,”

हाथी ने कहा।

माँ हाथी पर सवार हुई, कस्बे तक गई और लौटी।

पर तब चीखी, “नीचे उतारो, मुझे नीचे उतारो।

मुझे ऊंचाइयों से डर लगता है।”

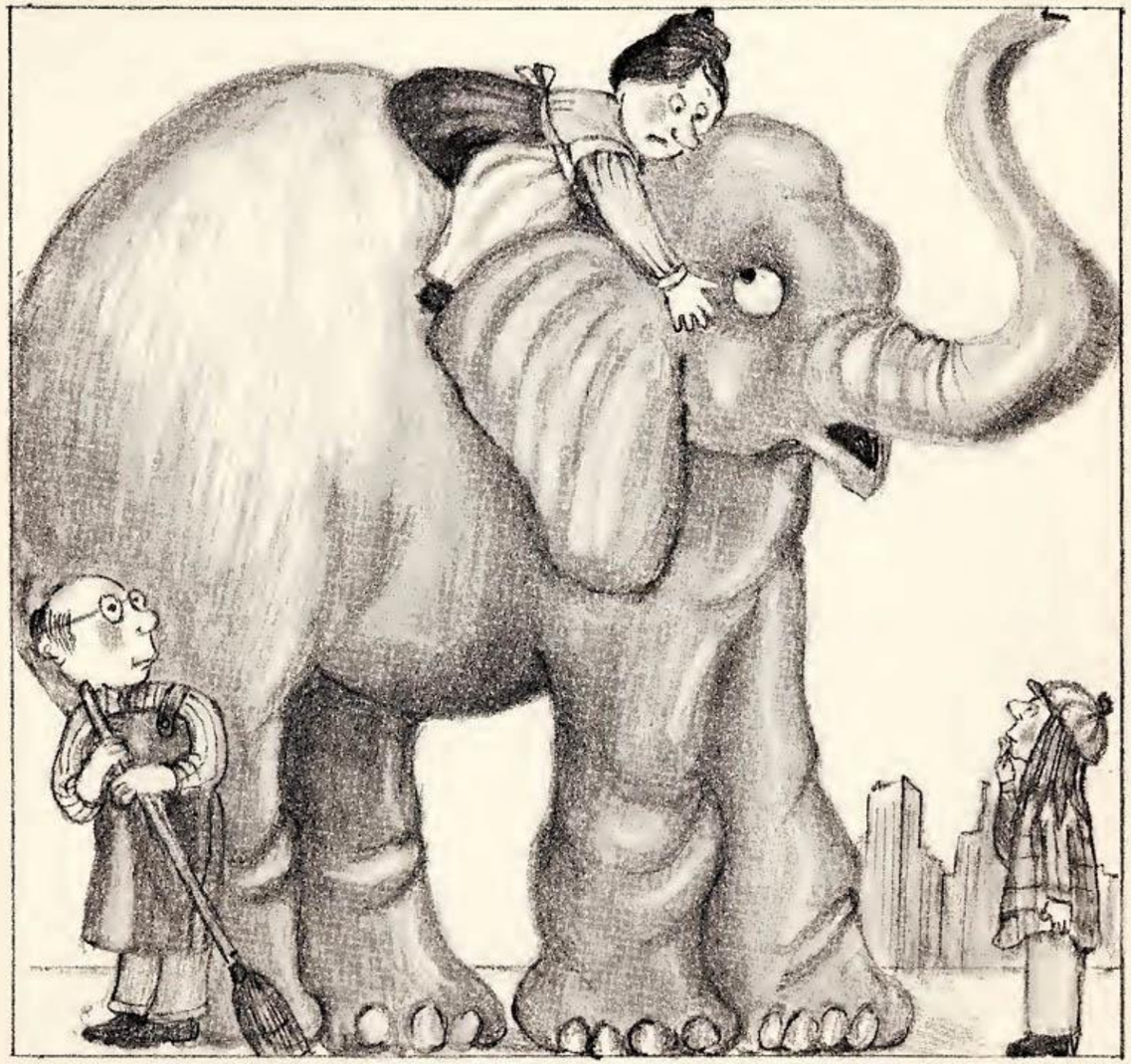

अगले दिन हाथी घड़ियाल में तब्दील हो गया।

“अरे नहीं!” माँ ने कहा।

“तुम मुझे मेरे दाँतों के डॉक्टर की याद दिलाते हो।”

“मैं झट से फ़ैसला करने में तुम्हारी मदद कर सकता हूँ,” घड़ियाल ने कहा।

“अपने फ़ैसले मैं खुद करती हूँ, शुक्रिया,”

माँ ने कहा।

घड़ियाल भालू में बदला।

“तुम मुझे डरा रहे हो,” माँ ने चीख कर कहा।

“मैं तुम्हें खास भालूई तरीके से गले लगाता हूँ,”

भालू ने कहा।

भालू ने भींच कर माँ को अपने गले से लगाया।

“तुम्हारा यह खास तरीका मेरी साँस ही बन्द कर रहा है,” माँ चीखी।

भालू चिड़िया बन गया।

“उड़ना चाहती हो?” चिड़िया ने पूछा।

माँ और चिड़िया इधर-उधर उड़े।

“मेरा सिर चकरा रहा है,” माँ ने कहा।

चिड़िया बन्दर में तब्दील हो गया।

“बन्दर गन्दगी फैलाते हैं!” माँ ने गुस्से से कहा।

“पर मैं तुम्हारा दिल बहला सकता हूँ,” बन्दर बोला।

“दिल बहलाने के लिए मेरे पास रेडियो है,” माँ ने कहा ।

सो बन्दर बकरा बन गया।

“उफ्फ!” माँ ने कहा, “तुम बदबू मारते हो।”

“पर मैं तुम्हारा सारा कचरा खा सकता हूँ,” बन्दर ने कहा।

“मेरे पास कचरे का डब्बा है,” माँ बोली।

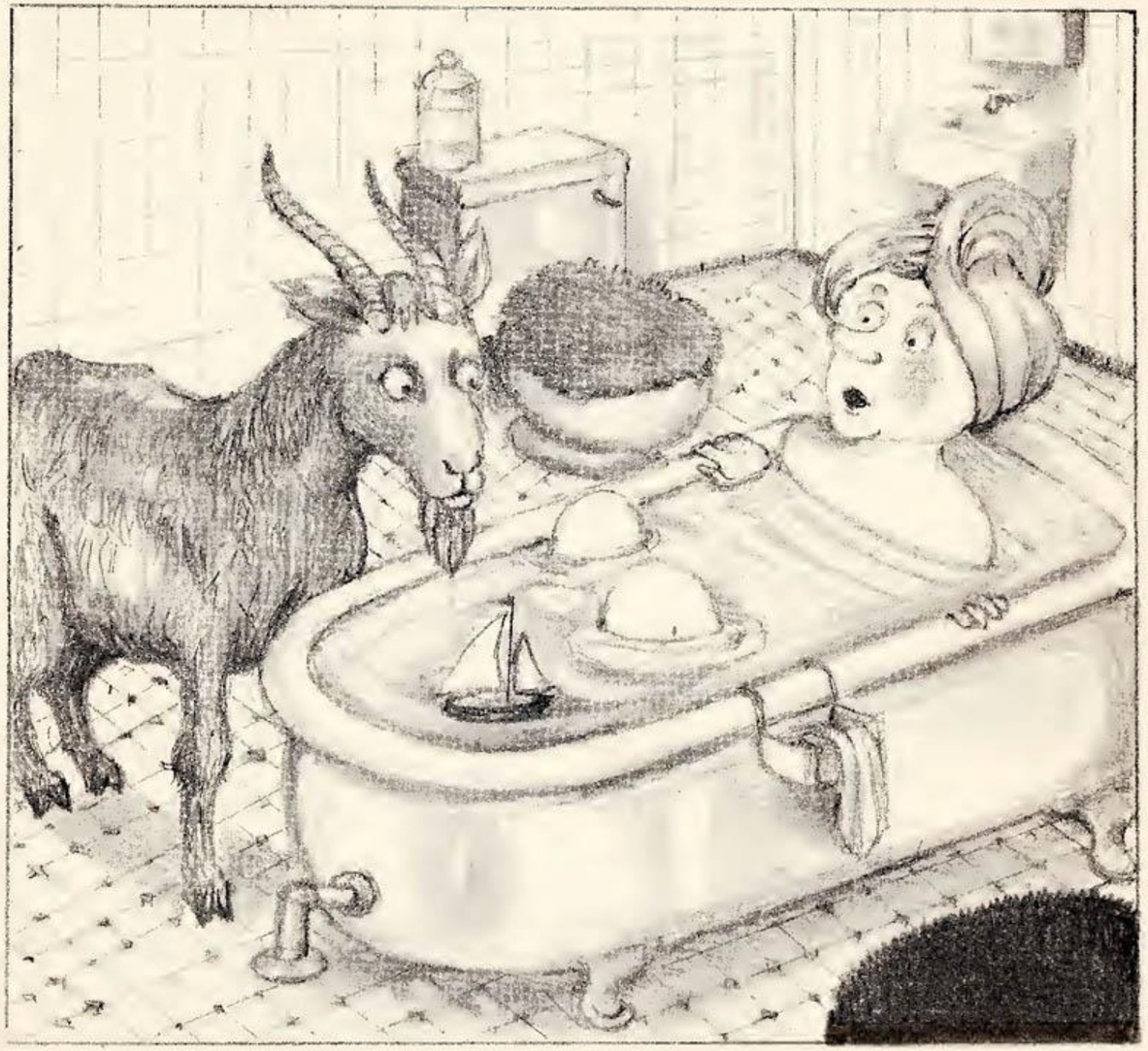

बकरा मेंढ़क में बदल गया।

“चलो हटो! मेरे मस्से उग आएंगे,” माँ बिफरी।

“मैं तुम्हारे घर की सारी मक्खियाँ चट कर जाउंगा,”

मेंढ़क ने लालच दिया।

“मेरे पास मक्खी चैंटू कागज़ है, शुक्रिया,”

माँ ने पलट कर कहा।

मेंढ़क सूअर बन गया।

“सूअर बहुत ही पेटू होते हैं,” माँ ने कहा।

माँ सूअर के साथ खाना खाने बैठी

तब चीखी, “इतना खा लिया, अब उपवास करना पड़ेगा।”

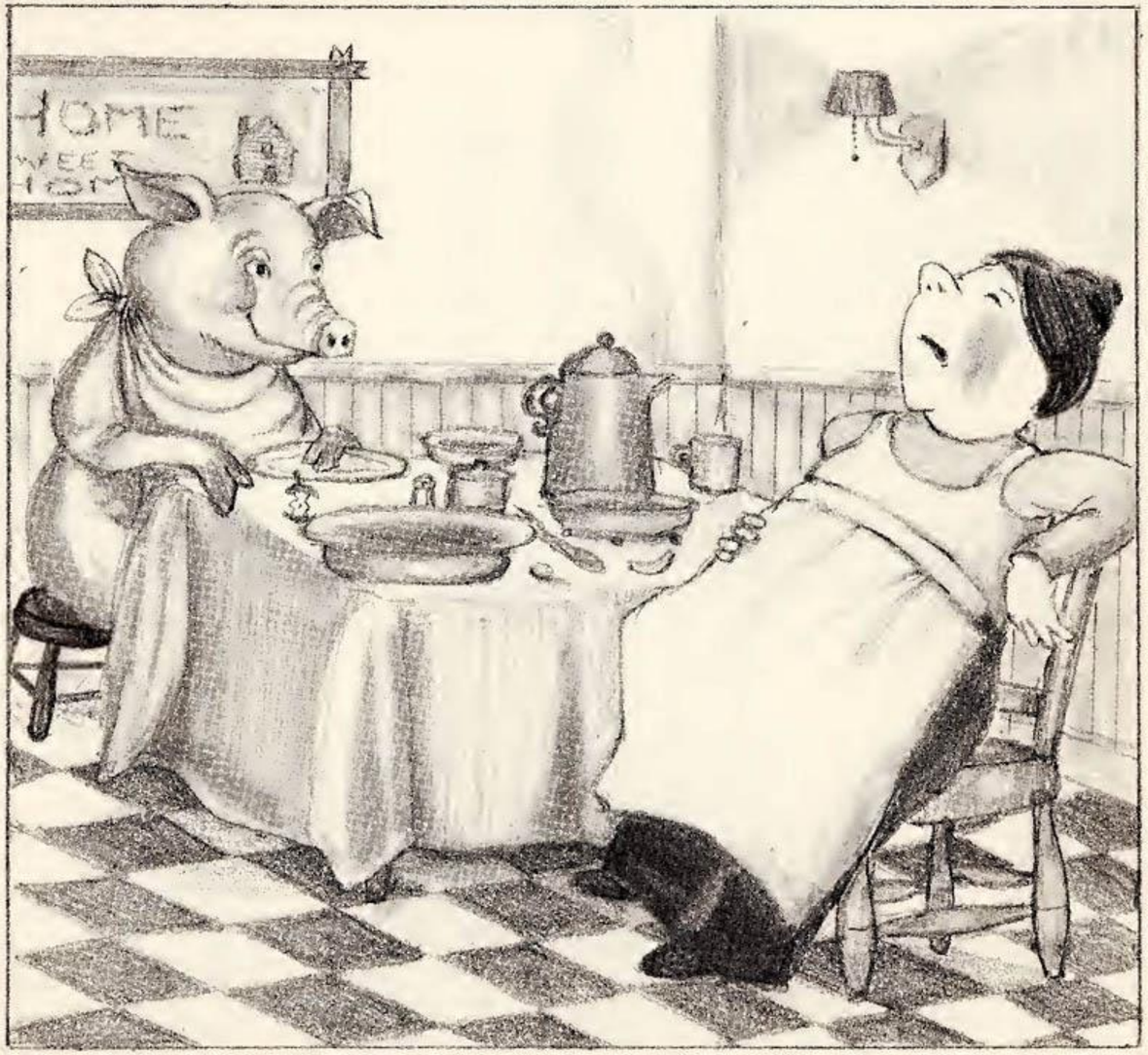

सूअर मुर्गा बन गया।

“तुम्हारी कुकड़ू कूँ, मुझे पागल बनाए दे रही है,” माँ ने कहा।

“मैं तुम्हें हर सुबह जगा सकता हूँ,”

मुर्गे ने कहा।

“मेरे पास अलार्म घड़ी है,” माँ ने कहा।

मुर्गा वॉलरस (एक समुद्री जानवर) में बदल गया।

“ओह! कितने दुख की बात है!”

“दुख की बात क्या है?” वॉलरस ने पूछा।

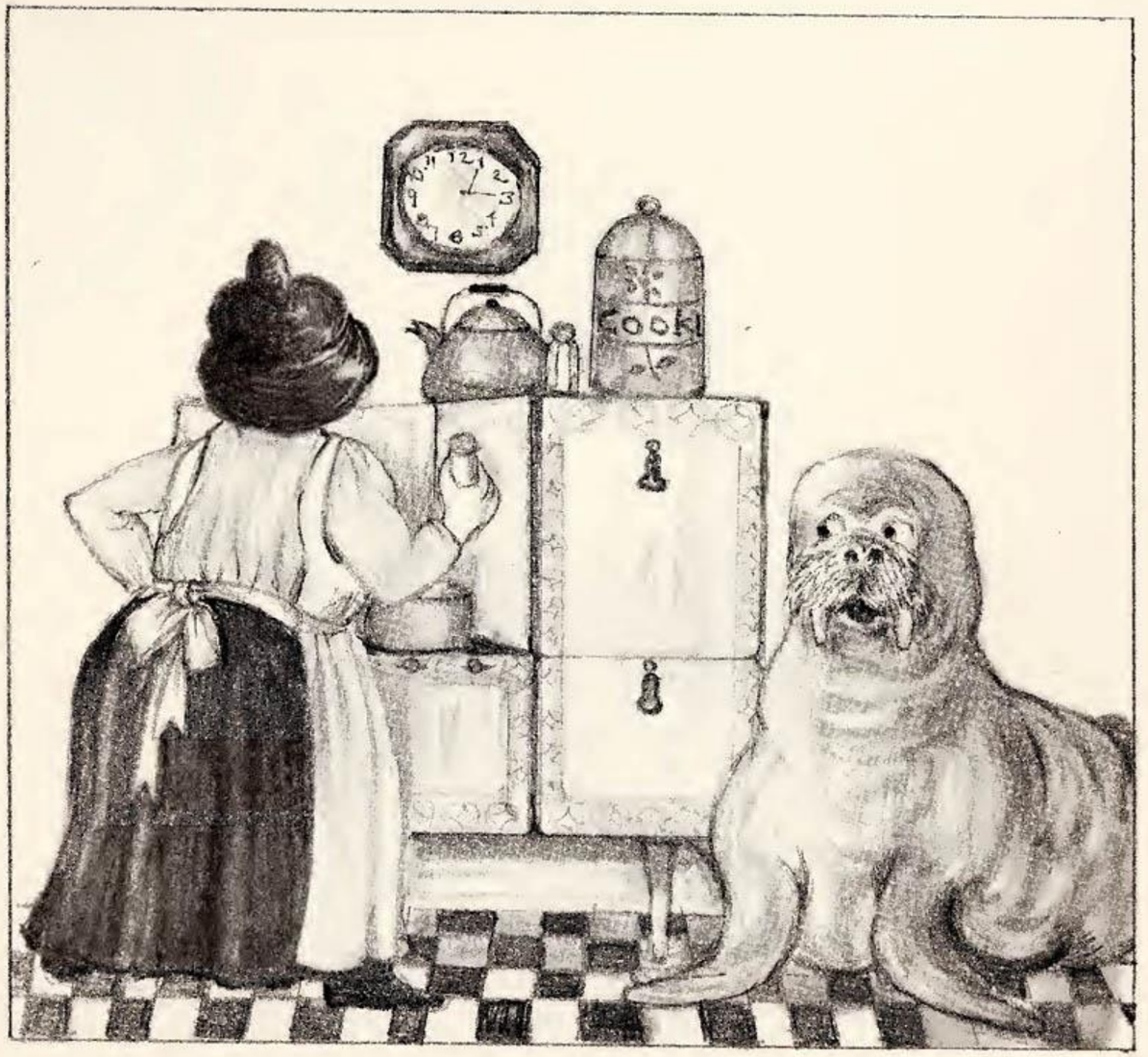

“मुझे वॉलरसों से प्यार है,” माँ ने कहा।

“पर तुम इतने बड़े हो कि मैं तुम्हें बाँहों में भर ही नहीं सकती।

वॉलरस ने लम्बी उसाँस छोड़ी, और कहा,

“तो मैं फिर से लड़का बन जाता हूँ।”

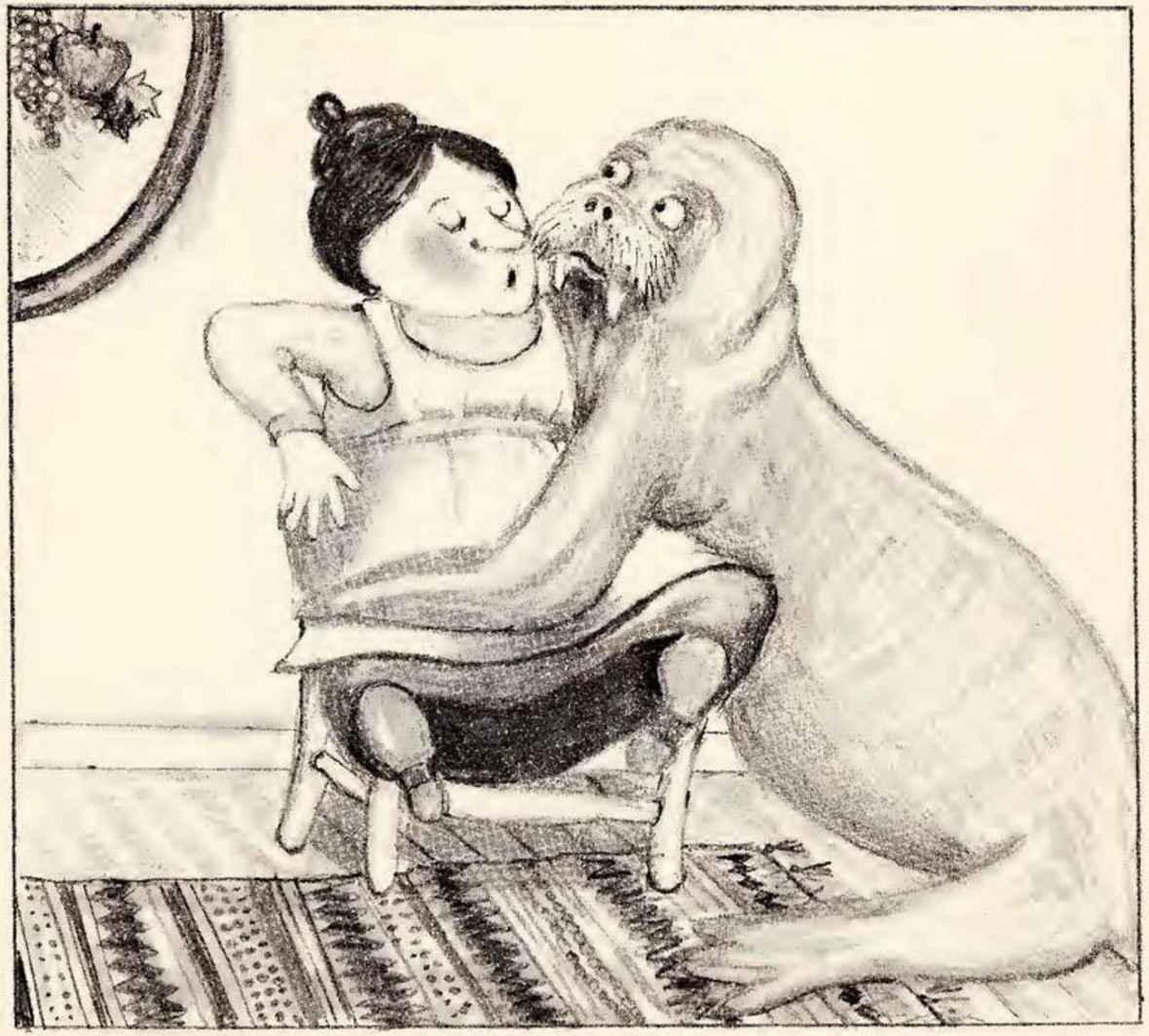

“रुको!” माँ ने कहा।

“मेरे पास एक बेहतर ख़याल है।”

बाल पुस्तकों के लेखक व चित्रकार **बैन शैक्टर** का जन्म न्यू यॉर्क सिटी में हुआ था। उनकी शिक्षा हाई स्कूल ऑफ म्यूज़िक एण्ड आर्टस् तथा येल ग्रैज्युएट स्कूल ऑफ ड्रामा में हुई। उन्होंने बैले, ऑपेरा और टेलिविज़न कार्यक्रमों के लिए पोशाकें भी डिज़ाइन की हैं। वे न्यू यॉर्क से कुछ दूर एक तीन सौ साल पुराने पत्थरों से बने फार्म हाउस में रहते हैं। उन्होंने कई सचित्र बाल पुस्तकों की रचना की है, जिनमें *कॉनरैडस् कासल* तथा *हैस्टर द जैस्टर* शामिल हैं। उन्होंने थैंक्सगिविंग की कविताओं के संकलन *मैरिली कम्स आवर हार्वेस्ट* के चित्र भी बनाए हैं।